



भारत में पाषाणकालीन पर्यावरणीय चेतना

अरविन्द कुमार (शोध छात्र)

नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, कोटवा, जमुनीपुर, प्रयागराज 20090

ABSTRACT

पाषाण काल में मानव का जीवन एक ओर जहाँ अपने पर्यावरणीय परिस्थितियों से समायोजन स्थापित करते हुए दिखाता है वह दूसरी ओर इस समययोजन की चेतना के पीछे पर्यावरणीय परिस्थितियों की प्रेरक शक्ति का योगदान भी देखा जा सकता है। जिसने मानव जीवन की रक्षा तथा अस्तित्व बनाये रखने में योगदान देने के साथ ही साथ उसे पुष्पित, पल्लवित, विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है सभी ओर से घेरने वाला, यह दो शब्दों के मेल से बना है। परि+आवरण – इससे परि का अर्थ है चारों ओर से और आवरण का अर्थ है घेरना वाला। पर्यावरण के अन्तर्गत सभी भौतिक तथा अभौतिक जीव और निर्जीव तत्व आते हैं। पर्यावरण की परिभाषा देते हुए साबिन्द्र सिंह एवं दूबे ने कहा कि “पर्यावरण एक अविभाज्य समष्टि है तथा भौतिक, जैविक एवं सांस्कृतिक तत्वों वाले पारस्परिक क्रियाशील तंत्रों से इसकी रचना होती है।”

प्राचीन भारत में पाषाणकाल का विकास तीन काल खण्डों में विभाजित किया जाता है। इसमें पूर्व पाषाण काल, मध्य पाषाण काल, नव पाषाण काल आते हैं। पाषाणकाल में मानव ने अपने पर्यावरण के साथ जो क्रिया तथा अतःक्रिया की, वह उसके मस्तिष्क में अंतर्निहित प्रेरणा से प्रभावित होने के साथ-साथ बाह्य प्राकृतिक वातावरण, जीव-जन्तु तथा धरातलीय स्थितियों और जलवायु के द्वारा भी प्रेरित और प्रभावित था। उसके मन-मस्तिष्क में एक विशेष प्रकार की चेतना का आविर्भाव हुआ, जिसने उसे अपने वातावरण के साथ अनुकूलन और पर्यावरण के साथ समायोजन करने में सहजता उपलब्ध कराई। चेतना के इस स्वरूप में मानव तथा पर्यावरण के मध्य होने वाली क्रिया प्रतिक्रिया ने विशेष योगदान दिया। पूर्व पाषाण काल में पर्यावरणीय चेतना –

पाषाणकाल में तीन कालखण्डों में सबसे पहले कालखण्ड के रूप में हम पुरापाषाण काल का अध्ययन करते हैं। पुरापाषाण काल में मानव के द्वारा पृथ्वी पर जो क्रिया कलाप किये गये उससे हमें आज के समय में विभिन्न प्रकार के साक्ष्य मिलते हैं, उन साक्ष्यों के माध्यम से पुरापाषाण कालीन मानव का उसके पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण और समायोजन क्षमता के विषय में जानकारी मिलती है। चूँकि यह पाषाणकाल का प्रारम्भ ही था इसलिये मानव के द्वारा किये गये प्रयास भी अपने प्रारम्भिक चरण में प्रतीत होते हैं। पुरा पाषाण काल का विभाजन भी तीन काल खण्डों में किया जाता है। इसमें

¹ अंजली श्रीवास्तव पुराणों में पर्यावरण शिक्षा इलाहाबाद यू0सं0 04, 2009

प्रथम कालखण्ड निम्न पुरापाषाण काल कहलता है तथा दूसरा काल खण्ड मध्य पुरापाषाण काल कहलाता है और तीसरे काल खण्ड को उच्च पुरा पाषाण काल के नाम से जाना जाता है।

निम्न पुरा पाषाण काल –

निम्न पुरा पाषाण काल खण्ड से मिले मानव द्वारा निर्मित और उपयोग में लाये गये उपकरणों के माध्यम से मानव तथा उसके पर्यावरण के बीच सम्बन्धों के विषय में जानकारीयों को प्राप्त किया जा सकता है। निम्न पुरापाषाण काल के उपकरण अपने आकार तथा प्रयोग की दृष्टि से कई प्रकार की विशेषतायें रखते थे। इनका आकार बड़ा होने के साथ-साथ अपनी निर्माण प्रक्रिया के प्रारम्भिक दौर में था, जिससे यह ज्ञात होता है कि मानव ने अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप इनका निर्माण और प्रयोग किया था तथा वह अपनी सुरक्षा के लिए और पशुओं के शिकार के लिए पत्थरों के इन उपकरणों का प्रयोग करके अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिये अपने पर्यावरण में उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करना सीख रहा था। सीखने की यह चेतना पर्यावरण से प्रेरित थी और अपने प्रारम्भिक दौर में थी निम्न पुरा पाषाण काल में मानव ने कई प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जिसमें पेबुल, चाँपर, चापिंग, पेबुल स्क्रैपर आदि थे। पेबुल उपकरण वह उपकरण थे जो पेबुल पर बने होते हैं।² यह पेबुल उपकरण नदियों की जलधारा में बहने के साथ-साथ लुढ़कने से चिकने हो जाते थे जब इनके किनारों में घर्षण होता था वो गोलाकार अथवा अण्डाकार हो जाया करते थे। भारत में पंजाब के सोहन घाटी में तथा दक्षिण में मद्रास से प्राप्त हुये हैं। नदी के जल धाराओं में पेबुल का प्रारम्भिक निर्माण होना था उसका मानव के द्वारा अपने उपयोग में लाया जाना नदियों से हुये लाभों में से एक होने के साथ-साथ नदियों की मानव को एक विशेष देन है जिसे निम्न पुरा पाषाण कालीन मानव ने अपने पर्यावरणीय चेतना से और अधिक प्रखर और प्रभावी बनाने का कार्य किया। इन पेबुल उपकरणों पर फलकीकरण किया गया जो कि मानव के मस्तिष्क में उत्पन्न सूझ के साथ-साथ पर्यावरण से प्राप्त अनुभव का परिणाम थे। एक पक्षीय उपकरण ऐसे उपकरणों को कहते हैं जिनका फलकीकरण एक ही पक्ष से करते हैं।³ ऐसे उपकरण जो एक पक्षीय थे उनमें साधारण पेबुल, स्क्रैपर और चापर थे। पेबुल, स्क्रैपर तथा चापर में मोबियस ने आकार का अंतर माना है। मानव ने अपने उपकरणों में चापिंग को भी पुरापाषाण काल में ही सम्मिलित किया था। यह एक उभय-पक्षी उपकरण है इसका निर्माण दोनों पक्षों से एकांतर तथा फलक निकालने से बनता है। मोबियस के अनुसार छोटा चापर की स्क्रैपर हाता है।⁴ मानव मस्तिष्क में अपनी आवश्यकता को लेकर के जैसे-तैसे स्पष्टता आभाषित होती है। वैसे ही अलग-अलग उपकरण बनाने के जो प्रयास किये वह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। निम्न पुरापाषाण काल में हमें कोर उपकरण तथा फलक उपकरण के उद्योग भी देखने को मिलते हैं। जहाँ पर मानव को फलक सुलभ के वहाँ पर कोर के स्थान पर उसने फलकों का ही उपकरण निर्मित किया।⁵ इससे यह ज्ञात होता है कि मानव अपने उपकरणों का निर्माण अपने पर्यावरण में मिलने वाली सहज तथा गुणवत्ता युक्त सामग्रियों से करना प्रारम्भ कर चुका था। निम्न पुरा पाषाण कालीन प्रस्तर उपकरणों में हैण्डेक्स सबसे महत्वपूर्ण उपकरण था। जिसका प्रयोग मानव तत्कालीन परिस्थितियों में किया करता था। निम्न पुरापाषाण काल में चाहे पेबुल और चापर चापिंग से सम्बन्धित संस्कृति हो और चाहे हैण्डेक्स

² डॉ० राधा कान्त वर्मा 'भारतीय प्रागैतिहास' इलाहाबाद पृष्ठ 74, 2007

³ डॉ० राधा कान्त वर्मा "भारतीय प्रागैतिहास" इलाहाबाद पृष्ठ 76, 2007

⁴ डॉ० राधा कान्त वर्मा "भारतीय प्रागैतिहास" इलाहाबाद पृष्ठ 77, 2007

⁵ डॉ० राधा कान्त वर्मा "भारतीय प्रागैतिहास" इलाहाबाद पृष्ठ 83, 2007

की संस्कृति हो दोनों ही नदी घाटियों से सम्बन्धित रही हैं। नदियों ने मानव को निम्न पुरापाषाण से ही जीवन यापन तथा आस्तित्व की रक्षा में सहयोग दिया था। मनुष्य की बहुत सारी आवश्यकताएँ मुख्यतः उस वातावरण पर निर्भर रहती है जिसमें वह जीवित रहने का प्रयत्न करता है।⁶

मध्य पुरापाषाण काल –

मध्य पुरापाषाण काल का समय परिवर्तन को दिखाता है जिसमें मानव के द्वारा बनाये गये पाषाणोपकरणों तथा मानव जीवन में परिवर्तन आया था जिसने इस काल को मानव तथा उसके पर्यावरण के मध्य समायोजन की एक विशेषता क्षमता से युक्त कर दिया। मध्य पुरा पाषाण काल में जिन औजारों को बनाया गया वह फलक पर अधिक आधारित थे। मध्य पाषाण काल में मिले इन औजारों के आकार में पहले की अपेक्षा छोटापन आया था जिसने मानव मस्तिष्क द्वारा उपकरणों के निर्माण में किये गये विशेष मानसिक सूझ-बूझ को दर्शाने का कार्य किया। इस काल का उपकरण सुझौलता लिये हुये है जो कि पहले की अपेक्षा सुन्दर प्रतीत होता है। मध्य पुरा पाषाण काल में मानव द्वारा अपने उपकरण बनाने के लिए जिन पत्थरों का प्रयोग किया गया उनमें पत्थरों के उपलब्धता को ध्यान में रखा जाता था, लेकिन उपकरणों के निर्माण के लिए पत्थरों का चयन बहुत कुछ उसकी स्थानीय उपलब्धता पर निर्भर करता था।⁷ इससे यह स्पष्ट है कि मध्य पुरा पाषाण कालीन मानव अपने पर्यावरण के साथ समायोजन करने की क्षमता में पूर्वकाल की अपेक्षा सक्षम हो गया था।

उच्च पुरा पाषाण काल –

उच्च पुरा पाषाण काल के पाषाण उपकरणों के जो साक्ष्य हमें देखने को मिलते हैं उनमें कुछ ऐसी विशेषता स्पष्ट होती है जो कि मानव के द्वारा अपने आस-पास के धरातल में मौजूद पत्थरों की विशेष समझ को दर्शाती है। उच्च पुरापाषाण काल के उपकरणों को उत्तम कोटि के प्रस्तर खण्डों से निर्मित किया गया है।⁸ उच्च पुरा पाषाण काल के उपकरणों में ब्लेड पर निर्मित उपकरण मुख्य है।⁹ यह इस बात का प्रमाण है कि इस काल में मानव ने ब्लेड पर आधारित उपकरणों में ब्युरिन, स्क्रैपर बेधक, अर्धचान्द्रिक, छिद्रक आदि का उपयोग अपने जीवन को सरलता प्रदान करने के लिये किया। उच्च पुरा पाषाण काल के ही प्रयागराज के बेलन घाटी में लोहदानाले से एक मूर्ति प्राप्त हुई है। जो कि अस्थि निर्मित मातृदेवी की मूर्ति है। इसके मिलने से यह स्पष्ट हो जाता है कि मानव ने अपनी भावनाओं को प्रकट करने के लिए तथा अपने मन मस्तिष्क को अभिव्यक्त करने के लिये मूर्तियों का सहारा लिया। उच्च पुरा पाषाण काल की यह प्रतिमा मानव द्वारा नारी के प्रति सम्मान भरे दृष्टिकोण को भी प्रकट करती हुई प्रतीत होती है। उच्च पुरा पाषाण काल में हमें महाराष्ट्र राज्य के पटणे नामक स्थान से शुतुरमुर्ग के अण्डे के कवचों के ऊपर आड़ी तिरछी रेखाओं के माध्यम से चित्रकारी करने के साक्ष्य मिलते हैं। शुतुरमुर्ग के अण्डे पर किया गया यह रेखांकन मानव के उन प्रयासों में से एक प्रतीत होता है जिसमें उसने सतह के विकनेपन से आकर्षित होकर उसपर अपने भावों के प्रकटीकरण का प्रारम्भिक प्रयास किया था। उच्च पुरा पाषाण काल में सीपी के बने मनके भी मिले हैं। जो कि मानव द्वारा खुद को सजाने सवारने तथा मनचाहा स्वरूप देने के प्रयास के तौर पर देखे जा सकते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि मानव ने अपने को एक विशेष पहचान

⁶ द्विजेन्द्र नारायण झा, कृष्ण मोहन श्री माली 'प्राचीन भारत का इतिहास' दिल्ली पृ0सं0 33, 2004

⁷ डॉ० राधाकान्त वर्मा "भारत की प्रस्तर युगीन संस्कृतियाँ" इलाहाबाद पृ0सं0 210, 2007

⁸ डॉ० वी०के० पाण्डेय 'पुरातत्व मीमांशा' प्रयागराज पृ0सं0 254, 2021

⁹ डॉ० वी०के० पाण्डेय 'पुरातत्व मीमांशा' प्रयागराज पृ0सं0 255, 2021

देने के लिए इन मानकों का प्रयोग किया होगा। पुरापाषाण काल में उत्तर एवं दक्षिण भारत की जलवायु में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते रहे जिसने तत्कालीन जीवन को प्रभावित किया। पुरापाषाण काल में मानव ने जलवायु में हो रहे परिवर्तनों के माध्यम से शीतलता और उष्णता दोनों का अनुभव किया। इस प्रकार मानव को समायोजन करने के लिये, पर्यावरण से प्रभावित चेतना का प्रेरित करना अवश्यसंभावी हो गया था। पुरापाषाण काल में मानव जंगल में गुफाओं में निवास करता था। उसने अपनी आवश्यकतानुसार उपकरणों का विकास भी किया। इस काल में मानव, हिरण, भैंसें, सुअर, बारहसिंहों, हाथी जैसे पशुओं से परिचित हुआ और उनका शिकार करके अपने जीवन-यापन के लिए भोज्य पदार्थ की जब व्यवस्था कर रहा था तो वह पशुओं के शरीर की आन्तरिक संरचना से भी परिचित हो रहा था। वह पशुओं के व्यवहार से परिचित होना भी प्रारम्भ कर चुका था।

मध्य पाषाण काल –

मध्य पाषाण काल काल समय उच्च पुरापाषाण काल के बाद और नवपाषाण काल से पहले आता है। मध्य पाषाण काल को उसके उपकरणों तथा मानव जीवन में आये परिवर्तनों के माध्यम से चिन्हित किया जाता है। उच्च पुरा पाषाण युग के अंत के साथ जलवायु उष्ण तथा शुष्क हो गई।¹⁰ जलवायु परिवर्तन ने एक ओर जहाँ जीव जन्तुओं तथा वनस्पतियों को प्रभावित किया जिससे इनमें परिवर्तन होने लगा वहीं इस जलवायु परिवर्तन ने मानव के द्वारा नये क्षेत्रों में प्रवेश को संभव बनाया। इसका प्रभाव यह पड़ा कि अब मानव पर्वतीय तथा पठारी भागों से आगे बढ़कर अन्य क्षेत्रों में भी निवास करने लगे।¹¹ इन क्षेत्रों में एक ओर जहाँ पर रेत के टीले में निवास के प्रयास किये गये वहीं दूसरी ओर शिलाश्रयों, गुफाओं, झीलों, नदियों के किनारे भी निवास करने का प्रयास हुआ। जलवायु परिवर्तन के कारण अब बर्फ के स्थान को घांस के मैदानों और जंगलों ने लेना प्रारम्भ कर दिया था। इस परिवर्तन से नये प्रकार के पेड़ पौधों तथा जीव जन्तुओं का भी प्रादुर्भाव हुआ। जलवायु में आ रहे नये परिवर्तनों ने जहाँ एक ओर ठंड में रहने वाले विशाल जानवरों जिसमें मैमथ, रेनडियर आदि थे को समाप्त करके छोटे-छोटे आकार के पशुओं के विकास में जिसमें हिरण बकरी आदि थे अपना योगदान दिया। अब मानव ने बदली हुई पर्यावरणीय स्थिति के साथ समायोजन करते हुए छोटे-छोटे हथियार बनाना प्रारम्भ किया। यह हथियार अब नई परिस्थितियों में प्रयोग करने के लिए उपर्युक्त थे। जो कि मानव के पर्यावरणीय चेतना को दर्शाते हैं। विन्ध्याचल की गुफाओं से शिकार युद्ध तथा नृत्य के चित्र मिले हैं।¹² मध्य पाषाण काल में मानव पशुओं के व्यवहार से और अधिक परिचित हुआ और उन पर नियंत्रण करके उन्हें पालतू बनाने लगा। इस प्रकार मानव अपने परिस्थितियों से सामाजिक स्थिति स्थापित करते हुए जिन नये उपकरणों का प्रयोग किया वह मध्य पाषाणिक उद्योग, लघु पाषाण उपकरण उद्योग के नाम से विख्यात है।¹³ जिसने उसे नई परिस्थितियों में शिकार तथा सुरक्षा में सहायता प्रदान की। बदलती जलवायु के साथ-साथ मानव की पर्यावरणीय चेतना में परिवर्तन और विकास के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।

नवपाषाण काल –

¹⁰ डॉ० वी०के० पाण्डेय 'पुरातत्वमीमांशा' प्रयागराज पृ०सं० 264, 2021

¹¹ डॉ० वी०के० पाण्डेय 'पुरातत्वमीमांशा' प्रयागराज पृ०सं० 264, 2021

¹² डॉ० वी०के० पाण्डेय 'पुरातत्वमीमांशा' प्रयागराज पृ०सं० 265, 2021

¹³ डॉ० राधाकान्त वर्मा "भारत की प्रस्तर युगीन संस्कृतियाँ" इलाहाबाद पृ०सं० 279, 2016

भारत में नवपाषाण काल लगभग-लगभग ईसा पूर्व 4000 के आस-पास परिलक्षित होने लगता है। भारतीय उपमहाद्वीप में नापाषाण काल की सबसे प्राचीनतम ज्ञात बस्तियों में मेहरगढ़ को माना जाता है। मेहरगढ़ का समय ईसा पूर्व 7000 के लगभग माना जाता है। मानव जीवन के विकास के कालों में नवपाषाण युग एक सबसे महत्वपूर्ण काल खण्डों में से एक है इस काल में मानव ने अपने आस-पास के पर्यावरण से प्राप्त चेतना का प्रयोग करते हुए प्रकृति में व्याप्त तत्वों पर नियंत्रण करने की चेष्टा को और अधिक विकसित करते हुए कृषि के कार्य को सम्भव बनाने में सफल हुआ। कृषि ने मानव जीवन में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किये अब मानव खानाबदोश जीवन से स्थिर जीवन की तरफ अग्रसर होने लगा। नवपाषाण काल में उसने एक ओर जहाँ स्थाई आवासों का निर्माण करना प्रारम्भ किया वहीं दूसरी ओर अब वह परिवार तथा कुटुम्बों के साथ-साथ ग्रामों में निवास करने लगा। प्रो० चाइल्ड के शब्दों में 'इस युग में' आत्मनिर्भर खाद्यात्पादक अर्थव्यवस्था का जन्म हुआ।¹⁴ नवपाषाण काल अपने आर्थिक क्रिया कलापों के साथ-साथ उपकरण निर्माण की विशेषताओं के दृष्टिकोण से भी कई महत्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शाता है। जो कि उसके बदलती हुई पर्यावरणीय तथा दैनिक आवश्यकताओं के लिये उपयोगी थे। इस काल की प्रमुख विशेषता पॉलिसदार पाषाणोपकरण (विशेषकर कुल्हाड़ियाँ) का निर्माण है।¹⁵ नवपाषाण काल के लोग मिट्टी के बर्तन बनाना प्रारम्भ कर चुके थे। ये मिट्टी के बर्तन चाक पर निर्मित थे। चाक के आविष्कार ने मानव को मृदभाण्ड बनाने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की। नवपाषाण युग का मानव आग का प्रयोग करने लगा था जिससे उसका जीवन और अधिक सहज तथा सुरक्षित हो सका। आग के प्रयोग करने की यह चेतना मानव जीवन के लिए आज भी उपयोगी सिद्ध हो रही है। नवपाषाण काल का मानव चित्रकला में भी रुचि लेने लगा था जिससे स्पष्ट होता है कि अपने भावों को तथा अनुभवों को चित्र के माध्यम से जहाँ एक ओर दर्शाना सीख गया था वहीं दूसरी ओर अपने बर्तनों को रंग कर उन पर चित्रकारी करके उन्हें सौन्दर्य प्रदान करने की कला से भी परिचित हो रहा था। इन चित्रों में शिकार सम्बन्धी चित्र की अधिकता है जो कि मानव द्वारा अपने पर्यावरण से हुई महत्वपूर्ण अंतःक्रिया से उत्पन्न पर्यावरणीय चेतना को प्रकट करने का प्रयास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. के०सी० श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, प्रयागराज, 2018-19
2. डॉ० रतन जोशी, पर्यावरण अध्ययन, आगरा, 2012
3. डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त, गुप्त सम्राज्य, वाराणसी, 2011
4. ओम प्रकाश, प्राचीन भारत का समाजिक एवं आर्थिक इतिहास, नई दिल्ली, 2001
5. द्विजेन्द्र नारायण झा, कृष्ण मोहन श्रीमाली, प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, 2004
6. महेन्द्र, रामचरण जी, वेद कथांक, वेदों में पर्यावरण रक्षा, 1999
7. सुनील, वनकाम, पर्यावरण मीमांसा, आगरा, 2008
8. गोयल, एम०के०, पर्यावरण शिक्षा, आगरा, 1997
9. एन०सी०ई०आर०टी० भारतीय आधुनिक शिक्षा, 2009
10. राष्ट्रीय मासिक पत्रिका, पर्यावरण विकास, 2012

¹⁴ डॉ० राधाकान्त वर्मा "भारत की प्रस्तर युगीन संस्कृतियाँ" इलाहाबाद पृ०सं० 325, 2016

¹⁵ के०सी० श्रीवास्तव प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति इलाहाबाद पृ०सं० 40, 2018-19